

2332

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४२४/१५० (४३३)

ग्रंथ नाम संस्कृत पबंध

विषय म. वेदांत

तं फल पाहवे ॥ ६० ॥ चिं ही तं फल गुणितं नीधि वारं च मिश्रितं ॥ अष्ट भी स्तु हरे प्रणे
शेषं स्तु शक्तिं फलं ॥ ६१ ॥ कथं चंद्रो तरे मार्गं स्वमिपं तु तशुक्रयोः ॥ भो मे वा के चंद्र र
स्तु सकटं शनि राहुणो ॥ व सुद्धि तियेन भवेद्य कार्यं रसे श्व वे दे निज कार्य सी दि ॥ स्पृ
त्रयं चेत्कथयंति वार्तान वैक पंच त्वरितं वदंति ॥ ६२ ॥ इति पाद प्रभा ॥ ॥ विभृति ३३ दीन
विशको मध्य भात दि हितै नं रस युतं न र पादे सिद्धि प्रमा ना च्च ना उघः ॥ अ भी ल पि न घटि पि
मध्यत काल रोयं ॥ त्रि गुण दि व समा नं ल उध मं क प्र भा स्यात् ॥ ॥ विभृति ३३ यां ॥ ते नि
स्यो मध्ये दि न मा ननु जो क रा वे शेष अंक तो वे ग ला ठे वा वा न र पा उ ला सि सा हा मे ल वा
वे ॥ दिन मा ना चे को ष अंक उ र ता तो या धा का मध्ये उ णा क रा वा ज्या मा साम मध्ये पाहा
वें त्या चे दी न मा न त्रि गुण क र वें जे अंक उ र ता सा पे भा रा धा वा ॥ ते ल उध फ लं जा पि जे
को ष उ र ति अशु र ॥ ६३ ॥ पाद प्र भा ॥ न रा मु नि ० भे टि वि जे म पि जे पा द घु मे मि ० मे
उ वि जे ये व सें पं व ति स ॥ १२५ ॥ सि भा ग दि जे ल उध उ र ते घ टी क र ते प ल ॥ पा द प्र भा
दि गु पि कृ ता ए का द श मि मि ता ॥ र वि वं द य मे भा गं धं कृ टि कृ ना ॥ १२६ ॥ शो ष फ लं ॥ पा
द प्र भा दि गु पि की जे ॥ या सि ॥ १२७ ॥ या सि भा ग ते णे दी जे ॥ ल उध घ टि का को ष
प लं ॥ रा त्रि मा न ॥ म ध्य ग तो र वि भा व थिं वि ग ण ये कृ मि ति तु र गो नि तं ॥ न ख ह तं वि भ

जेवरागनेचरेः भवतिलब्धघटिनिदिनोदया ॥ अश्वीनीघातुका नो पूर्वार्धे सिद्धयेनेपी
 ना ॥ पोः साहिककरोषार्धे जननीमरणं विंशतिः ॥ इदं यवनजातकमुक्तं ॥ इति ज्येष्ठा
 १२) नक्षत्रेशुभाशुभविचारः ॥ ॥ हीवरनक्षत्रपाठावे अठळ अमणुपाठावे ॥ सूर्यादि
 गणप्येते चंद्रसहस्रीभागमाहारे ॥ त्रिंशद्भूमणं नैवदिः सप्तहताहले ॥ प्रथमपंचव
 ११) हारो अठळो नास्ति निश्च ॥ यकवंशानकोविंशं अष्टाविंशतिकात् ॥ अठले १० प्रविज्ञे
 यंता निम्सु ज्वरा कृपं ॥ कंधनं विज्ञापस्त्रानि गमने च विवर्जयेत् ॥ अमणेतुन गंत
 व्यंक्रमेणु ॥ हनियं धनलाभं ॥ अथ विनाशनं ॥ सूर्यादिगणये चांद्रं त्रिंशं ति
 धिनारयुक्तं ॥ ग्रहसंख्याहरे ॥ शं सप्तवचनीकरं ॥ सूर्यादिगणये चांद्रं त्रिंशं ति
 यीमी जितं ॥ सप्तमी साहरे ॥ शं त्रिंशं विज्ञापस्त्रानि गमने च विवर्जयेत् ॥ अमणेतुन गंत
 कीदिणाहवाहु युक्तं ॥ अथ विनाशनं ॥ सूर्यादिगणये चांद्रं त्रिंशं ति
 मात् ॥ मानं उदिपदं ति विचलमेधि स्येत् ॥ रं गे गृहे स्वर्णायास्तीथिवारभानिचतथा
 मोगार्थं ति अंशकः ॥ शिष्येन संपुतं असहनये क्रतुचंद्रमाः ॥ धाम्नेन भाजं ये देदेः श
 धं चरुणा विन्यसेत् ॥ ॥ मे कालज्ञे गृहकारभो धनधान्ये समुद्रवाः ॥ वृषभे सर्वसंपत्ति
 मिधुने हनं भवेत् ॥ कर्कटे दिग्मायुः ॥ सितं बहुसूतोदया ॥ कं यो यो निमृशदिदं तु

लक्ष
 फलं
 नसी

गृह
शां
व्या

लायां शोभनं भवेत् ॥ वृश्चिके रत्नलाभस्य धनराशौ धनक्षयो ॥ मकरे पशुमैश्वर्यं कृ
भराशौ धनक्षयः ॥ मीने च पुत्रनाशायै गार्थस्य वचनं पृथक् ॥ १ ॥ मीने चोका कूलं वि
द्याद्वैशाखे च धनागमं ॥ ज्येष्ठे मासि भवेत्कृशपाठे पशुनाशनं ॥ श्रावणे पशुसंप
तिर्नाशो भाद्रपदे भवेत् ॥ अश्वीने कलहं विद्युं ॥ धात्कार्तिके च धनागमः ॥ मार्गे च धना
संपत्तिपुष्पे च रत्नलाभदं ॥ माघे चाग्निभयं विद्यात्फालगुणे च धनागमः ॥ ध्वजो धूमो
थुसिहोश्चः कारभो धरु रोगजः ॥ ध्यां क्षत्रेति क्रमेणैकआयाएकमुद्राहर्त ॥ साक्षिप
रत्वे गृहप्रकरणां ॥ नरहं वृश्चिके पूर्वे अश्वीने अयंगतः ॥ इक्षीणे नवसेतुं न्येने क
सांकष्टककं ॥ पठिमे थलु नाराय्या दाय व्यामर पां तुले ॥ उत्तरे नवसे न्ये वेतुं ने ई
शोकुं ने विनश्यति ॥ वृषचमि धुने सिहे मकरे मध्यवर्जितं ॥ १ ॥ मार्गे यौषे च वैशाखे आ
वणे फालगुणे तथा ॥ यनेषु च गृहहारं भावात्कशास्त्रे प्रकीर्तितं ॥ १ ॥ चीत्रानुराधाम् गरे
वती च स्वाति धनिष्ठा त्रयोमुत यणं ॥ हस्ते यपुष्टे शतरोहिणि रत्नं मप्रतिष्ठा बहु रा
ज्यलक्ष्मी ॥ २ ॥ पुष्ये मेत्रे धनिष्ठां चित्रा देवति चारुणे ॥ उत्तरायाम् मने आर्द्रे प्रवेशं कार
ये हृहं ॥ १ ॥ हस्तः पुष्यपुनर्वसु शतप्रिष क् स्वात्तितिन थारोणि देवहृतर मत्रयं हरि म

(५)

गोमूलं धनि एतन्नि ॥ कं व्याकुं सवृषालिते च सिंहपि धुने न सत्ररा स्यो न मा वा रा जी
 वशनी इव सोम भृगु जो वेद्यम प्रवे शो भु ॥ १ ॥ मघा मग डि रो हं क्त स्वा ति मु मुं लानु रा थ
 शो ॥ रेव ति रो ती पि चै व न त रा पि त्र य स थ ॥ आ वा हे च वि वा हे च वि धा सं ग्र ह णे षु
 च श वा प य त्स र्व वी जा मि र हं ग्रा मं प्र वे श ये त् ॥ १ ॥ आ रं भ व श भं च क्रु पं ति ए त्तं भ
 कु म्भ क ॥ प्र वे शं क ल शं च क्रु वा स्र च क्रुं प्र कि नी ति ॥ १ ॥ व षः त्रि वे श ॥ त्रि वे श श्चि दि
 त्रि वे श क तः श नी ॥ कू र्या त् इ मीं स सु द्वा स्ये त्ते पं ति ॥ श्रीं द रि इ त ॥ ध न आ धी क मा न् र
 (3) म् प्र वे श रं भ यो व षः ॥ १ ॥ ऐं डे डि रे भ ॥ इ प र दि मा से पा ये स्त्रि रे मा र्ग डि र त्र ये च ॥ फा ल गु
 णु मा से डि रः प श्रु ती मे च ये एा दि मा से वि ष वा त रा सु ॥ १ ॥ क ल श वा क स्र ॥ १ ॥ स र्व
 वे दि श्च च वा रि च वा रि ग र्भ य व च ॥ कं डे डि डि र वा दि स्था पे क्र मा त् ॥ १ ॥ मु रे व
 त् सं डि र छे दं पू र्वे गु द्वा स नं त वे च ॥ इ श्च णे चार्थ ल भ स्या त् त्रिा मे त्रि य सं प दाः ॥ उ त्त
 रे शो क सं ता पो ग र्भे ग र्भे वि न स्ये ति ॥ चि र का ळ व से त्कं जे गु दे आ रो ध्ये मी रि तं ॥ कू म्भ व
 स्र ॥ ति धि प्रे क्ता प च गु णा क्रो क्त क ति का रू स्र सं यु तं ॥ त्र यो द श मि श्रि ता च न व त्रि भा
 ग भा जि तं ॥ चं ड के मु नि ज ले प क्ष शं ग व स्र ख ल्बे ॥ त्रि ष क्च न व का शै र्मु र्दे वं चं ड या म् वे ॥

१३

१२
(3)



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com